राजभवन, देहरादून में संस्कृत सप्ताह महोत्सव के शुभारम्भ समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(08 अगस्त 2022)

संस्कृत सप्ताह महोत्सव के शुभारम्भ समारोह में मंच पर उपस्थित विधानसभा अध्यक्ष जी श्रीमती ऋतु खण्डूड़ी भूषण जी, शिक्षा मंत्री श्री धन सिंह रावत जी, वित्त मंत्री श्री प्रेमचंद अग्रवाल जी, पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज जी, यहां उपस्थित सचिव गण, कुलपति गण, निदेशक गण, आचार्य, प्रोफेसर एवं प्रतिभागी महानुभाव!

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि, संस्कृत सप्ताह का शुभारंभ आज राजभवन से होने जा रहा है।

मुझे बताया गया कि शिक्षा मंत्री श्री धन सिंह रावत जी ने '**संस्कृतदिनम्**' और '**संस्कृतसप्ताहः**' **को** प्रतिवर्ष मनाए जाने का निर्णय लिया है और इसका शुभारम्भ राजभवन से होने जा रहा है।

संस्कृत भाषा के विकास के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है। मैं आपको इस कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

मेरी इच्छा थी कि संस्कृत का कार्यक्रम राजभवन में किया जाए और यह एक अच्छा अवसर है कि यहां से संस्कृत भाषा को बढावा देने के लिए एक नयी शुरूआत होने जा रही है।

प्रदेश में संस्कृत भाषा को जो द्वितीय भाषा का दर्जा दिया गया है, उसके अनुरूप उसे मान और सम्मान मिलना ही चाहिए।

'संस्कृतदिनम्' की जो शुरूआत धनसिंह जी ने की है, उसे हम पिछले पच्चीस हजार सालों से मनाते आ रहे हैं, लेकिन इसे एक शासकीय दायरे में लाने का काम संस्कृत शिक्षा मंत्री जी ने कर दिया है इसे आने वाले युगों में याद किया जाएगा।

श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला **रक्षाबंधन पर्व संस्कृतदिनम्** हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उत्तराखण्ड में तो यह पर्व न केवल भाई–बहनों तक सीमित है, अपितु यह एक **सामाजिक उत्सव** और समरसता का भी पर्व है।

इस पर्व को संस्कृत भाषा के साथ जोड़ कर चिरस्थायी बनाने वाला यह कार्य हुआ है।

हमें पता है कि संस्कृत ही है जो दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है, वेदों की भाषा, हमारे देश के ज्ञान और विज्ञान की भाषा है।

भारत को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा है। देश के हर कोने में बोली जाने वाली भाषा है। हर स्थान पर सम्मानित होने वाली भाषा है।

हमारे समाज और संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में एक जीवंत भाषा है।

संस्कृत के बिना अपनी संस्कृति और सभ्यता को समझना और उसकी रक्षा करना कठिन हो जाएगा।

वेदों में हमारे दिव्य ज्ञान को समाहित किया गया है, उपनिषद और पुराणों से प्रवाहित होती हुई, विभिन्न ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में संस्कृत भाषा ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखा है, इसलिए इस भाषा के साथ में प्रत्येक व्यक्ति को आत्मसात होना चाहिए क्योंकि यही वह भाषा है जो हमें एक दूसरे से जोड़ती है संजोए रखती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में संस्कृत भाषा एक उच्च स्तरीय बौद्धिक विमर्श का एक आधार बनेगी।

मुझे बहुत खुशी है कि यहां पर अनेक नीति निर्णायक मंत्री गण, सचिव, कुलपति, निदेशक और तमाम संस्कृत विद्वान एकत्रित हो रखे हैं, आप सब को यह सोचना है, कि संस्कृत भाषा को आप किस प्रकार आगे बढ़ा सकते हैं।

इस भाषा के विकास और संरक्षण के लिए हमें अपने बच्चों को ज्ञान और विज्ञान के साथ संस्कृत को जोड़ते हुए उनको कौशल संपन्न बनाना होगा।

हमे यह ध्यान में रखना होगा कि अपने बच्चों को भविष्य देने के लिए आप और हमारी सामूहिक जिम्मेदारी क्या है?

यदि आप अपने दायित्व से विमुख होते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप अपनी पीढ़ी को एक बहुत बड़ी बौद्धिक संपदा से विमुख कर रहे हैं, वंचित कर रहे हैं।

हमें अपने बच्चों को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाना है इसके लिए सबसे बड़ा अवसर हमारे सामने नयी शिक्षा नीति का विजन है। संस्कृत हमारे हाथ में हमारे ऋषियों मुनियों की और से संजोया हुआ एक खजाना है, यह संस्कृत भाषा ही वह सेतु है, जो प्राचीन को नवीन से जोड़ती है।

और इस संकल्प को राज्य में हम क्या प्राथमिक स्तर पर प्रतिवर्ष पांच लाख बच्चों को संस्कृत भषा सिखाने का लक्ष्य ले सकते हैं, इसी प्रकार से माध्यमिक स्तर पर तीन लाख बच्चों को संस्कृत पढाने का और उच्च शिक्षा में दो लाख बच्चों को उनके मूल विषयों के साथ साथ संस्कृत को सीखने लक्ष्य हासिल कर सकते हैं क्या!

संस्कृत भाषा से उत्तराखण्ड की लोक भाषाएं, बोलियों को जीवन मिलेगा। योग, आयुर्वेद, मर्म, प्रकृतिक चिकित्सा, ज्ञान–विज्ञान के मूल स्रोत और संस्कृति को जीवंतता मिलेगी। देवभूमि का गौरव बढ़ेगा।

मुझे आशा है कि आप यहां से एक नये संकल्प को ले कर जाएंगे। आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

आप सभी को संस्कृतदिवस, संस्कृत सप्ताह और रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!

जय हिन्द!